भारतीय इतिहास की रूपरेखा पर पुनर्विचार

श्याम कुमार

सैंधव सभ्यता के बाद वैदिक युग और फिर लौह युग प्रारम्भ होता है। वैदिक काल का सम्पूर्ण ज्ञान केवल साहित्यिक स्त्रोतों पर ही आधारित है, ऐसा ज्ञात है। बौद्ध कालीन भारत के विषय में भी बौद्ध और जैन साहित्य से ही सूचनाएँ मिलती है। उस समय षोडश महाजनपदों में चार प्रमुख राजतंत्रीय राज्य थे। इनमें मगध (वर्तमान पटना, जहानाबाद, गया और नालन्दा जिला अधिक शक्तिशाली था।) इसने पड़ोसी राज्यों के अधिग्रहण का अभियान शुरू कर धीरे–धीरे पूरब में अपना क्षेत्र भागलपुर से लेकर पश्चिम में पंजाब की सीमा तक बढ़ा लिया था। इतने बड़े राज्य के शासक चंद्रगुप्त मौर्य को जब विदेशी पश्चिमी विश्व के यवन आक्रान्ता सिकन्दर का सामना करना पड़ा तो उसके सेनापति सेल्यूकस को पराजित कर संधि के अनुसार चंद्रगुप्त मौर्य को पुनः भारत की प्राकृतिक सीमा बिलूचिस्तान और अफगानिस्तान तक अपना राज्य बढ़ाने का अवसर मिला। मौर्य के बाद शुंग काल के इतिहास का परिचय मिलता है। अन्तिम मौर्य शासन के सांस्कृतिक विचारों को बल मिला क्योंकि शुंग शासक कट्टर ब्राह्मण थे जिन्होनें वैदिक यज्ञों की जहाँ एक लम्बी मृत परम्परा को पुनर्जीवित किया वहीं समाज में प्रचलित बौद्ध धर्म को भी अपनाया। शुंग काल के बाद आंध्र सातवाहन का राज्य कावेरी नदी के किनारे आंध्र प्रदेश में धरणीकोट नाम की एक प्रसिद्ध नगरी थी जिसका नाम पीछे अमरावती पड़ा। भारतीय संस्कृति की यह एक मूल विशेषता है कि इसमें प्रत्येक संस्कृति की धारा चाहे वह स्वदेशी हो अथवा विदेशी, जो भी इसके सम्पर्क में आती है उसके मूल तत्व इसमें पूर्णतया घुलमिल जाते हैं।